भारतीय रक्षा सेनाओं का स्वर्णिम और अत्यंत गौरवशाली इतिहास अदम्य साहस शौर्य और मातृभूमि के प्रति अटूट समर्पण की एक अद्भुत गाथा है। 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश साम्राज्य की बेड़ियों से मुक्त होने के पश्चात् हमारे नवजात राष्ट्र को अपनी संप्रभुता और भौगोलिक अखंडता की रक्षा हेतु कई भयंकर और जटिल चुनौतियों का सामना करना पड़ा। 22 अक्टूबर 1947 को जब पाकिस्तानी कबाइलियों ने कश्मीर घाटी पर अचानक और क्रूरतापूर्ण आक्रमण किया तब भारतीय सेना के वीर जवानों ने अपने प्राणों की आहुति देकर श्रीनगर हवाई अड्डे और संपूर्ण घाटी को दुश्मनों के कब्ज़े से सफलतापूर्वक बचाया था। इस भीषण युद्ध में 3 नवंबर 1947 को मेजर सोमनाथ शर्मा ने अपने अद्वितीय पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए वीरगति प्राप्त की थी जिसके लिए उन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च सैन्य अलंकरण परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था। भारतीय सशस्त्र बलों ने 1965 और 1971 के ऐतिहासिक युद्धों में भी अपनी अभूतपूर्व सामरिक बुद्धिमत्ता और रणनीतिक उत्कृष्टता का शानदार परिचय दिया था। 3 दिसंबर 1971 को आरंभ हुआ भारत पाकिस्तान युद्ध मात्र 13 दिनों के भीतर 16 दिसंबर 1971 को समाप्त हो गया जब पाकिस्तानी सेना के लगभग 93000 युद्धबंदियों ने भारतीय सेना के समक्ष बिना किसी शर्त के आत्मसमर्पण कर दिया और एक नए स्वतंत्र राष्ट्र बांग्लादेश का आधिकारिक रूप से जन्म हुआ। राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की स्थापना 1 जनवरी 1958 को की गई थी जिसका मुख्य उद्देश्य भारतीय सेना को अत्याधुनिक और स्वदेशी हथियारों से पूर्ण रूप से सुसज्जित करना था। महान् वैज्ञानिक डॉ एपीजे अब्दुल कलाम के कुशल और दूरदर्शी नेतृत्व में वर्ष 1983 में एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया जिसके अंतर्गत पृथ्वी त्रिशूल आकाश नाग और अग्नि जैसी मारक मिसाइलों का सफल परीक्षण करके भारत ने संपूर्ण विश्व को अपनी वैज्ञानिक क्षमता का उत्कृष्ट प्रमाण दिया। 11 मई और 13 मई 1998 को राजस्थान के पोखरण में हुए पाँच सफल परमाणु परीक्षणों ने भारत को आधिकारिक रूप से एक पूर्ण परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। आधुनिक युद्ध प्रणाली और राष्ट्रीय सुरक्षा तंत्र को अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से सरकार ने जल थल और वायु सेना के मध्य एकीकरण स्थापित करने हेतु 1 जनवरी 2020 को चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ का नया और अत्यंत महत्त्वपूर्ण पद सृजित किया। वर्तमान परिदृश्य में जब साइबर सुरक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव युद्ध के पारंपरिक तौर तरीकों को पूरी तरह बदल रहा है तब हमारी सेनाएँ भी तकनीकी रूप से स्वयं को निरंतर अत्याधुनिक बना रही हैं। वायुसेना की मारक क्षमता में वृद्धि करने हेतु 29 जुलाई 2020 को 5 राफेल लड़ाकू विमानों का पहला जत्था फ्रांस से भारत पहुँचा जिसे 10 सितंबर 2020 को आधिकारिक रूप से अंबाला एयरबेस पर वायुसेना में शामिल कर लिया गया। इसके अतिरिक्त 2 सितंबर 2022 को भारत के पहले स्वदेशी विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत को नौसेना में शामिल किया गया जिसका कुल वज़न लगभग 45000 टन है और इसे बनाने में 20000 करोड़ रुपये से अधिक की लागत आई है